CURRICULUM
SANSKRIT
(CLASSES V-VIII)

Research Development and Consultancy Division
Council for the Indian School Certificate Examinations
New Delhi

© Copyright, Council for the Indian School Certificate Examinations

All rights reserved. The copyright to this publication and any part thereof solely vests in the Council for the Indian School Certificate Examinations. This publication and no part thereof may be reproduced, transmitted, distributed or stored in any manner whatsoever, without the prior written approval of the Council for the Indian School Certificate Examinations.

संस्कृत

भूमिका

मानव सभ्यता के ऊषाकाल से ही संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, कला, विज्ञान आदि अवधारणाओं की अभिव्यक्ति का उपयुक्त माध्यम रही है । अपनी इन विशेषताओं के कारण इसे वैज्ञानिक भाषा माना जाता है और देववाणी कहलाने का भी गौरव प्राप्त है । इसे विश्व की अनेक भाषाओं की जननी माना गया है । इस भाषा में आपसी सहयोग, सामञ्जस्य, त्याग, सत्य, प्रेम, अहिंसा, राष्ट्रभक्ति एवं विश्वबन्धुत्व के भावों की निर्झरणी प्रवाहित होती है । अतः इन भावों को हृदयंगम करके राष्ट्र के विकास हेतु संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है ।

भाषा की पाठ्यचर्या में बच्चों की अभिरुचि एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विषयवस्तु का क्षेत्र व्यापक होना चाहिए । कक्षा की गतिविधियों को बच्चों के वास्तविक जीवन से जोड़ने की आवश्यकता है, जिससे उनमें जीवन मूल्यों का विकास हो सके और उनकी सृजनात्मक क्षमता एवं कल्पनाशक्ति को एक नया आयाम मिले । भाषा बच्चों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति, चिंतन एवं विश्लेषण योग्यता के विकास का माध्यम बनती है । वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में संस्कृत भाषा के महत्त्व को समझते हुए विभिन्न देशों द्वारा इसे अंगीकार किया जा रहा है । अतः संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि को समझने के लिए संस्कृत भाषा का शिक्षण-अधिगम सहज एवं रोचक विधि से प्रदान करना समय की मांग है जिसे मूर्त रूप देने की आवश्यकता है ।

पाठ्यचर्या की विशेषताएं -

इस पाठ्यचर्या में निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान दिया गया है -

- संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना ।
- संस्कृत भाषा में निहित मानवीय मूल्यों को आत्मसात् करना ।
- भाषिक तत्वों - श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन कौशलों में कुशलता प्राप्त करना ।
- जीवनमूल्यों से युक्त विषय वस्तुओं का समावेशन करना ।
- संस्कृत में सामान्य वार्तालाप में सक्षम होना ।
- विविध संदर्भों में प्रयोग की जाने वाली शब्दावली का विकास करना ।
- रेडियो एवं दूरदर्शन पर संस्कृत समाचार सुनकर समझने की योग्यता का विकास करना ।

- कक्षा में भाषा, धर्म और संस्कृति की विविधता को ध्यान में रखते हुए उनसे संबंधित मुद्दों के प्रति संवेदनशील एवं सकारात्मक सोच विकसित करना ।

संस्कृत भाषा के विषय / क्षेत्र :

यह पाठ्यचर्या संस्कृत भाषा के शिक्षण - अधिगम की समग्र भाषा पद्धति के परिप्रेक्ष्य पर केन्द्रित है । यह पाठ्यचर्या अनुशंसा करती है कि संस्कृत शिक्षण - अधिगम जीवन मूल्यों पर आधारित हो जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके और वे इसके मूल तत्वों को समझने में सक्षम हों ।

कक्षा की गतिविधियों में इस प्रकार की विषय वस्तु समाहित हो जिससे बच्चों में आवश्यक जीवन मूल्यों का बीजारोपण हो सके। भाषा का विकास अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेषण हेतु प्रयोग में आने वाले कौशलों से संबंधित हो जिसमें श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन मुख्य तत्व रहें । संस्कृत शिक्षण को बहु आयामी बनाने के लिए इसे अन्य पाठ्यचर्यक विषयों से सह संबंध बनाते हुए विकासोन्मुखी होना चाहिए । संस्कृत भाषा की पाठ्यचर्या में स्थानीय एवं वैश्विक विभिन्न समसामयिक विषयों, सरोकारों एवं मुद्दों को सम्मिलित करने की आवश्यकता है यथा- पर्यावरणीय-चिन्ता, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, सतत् विकास, प्राणी व वनस्पति जगत की सुरक्षा एवं संरक्षण, मानवाधिकार आदि। पंचतंत्र, कथासरित्सागर, बृहदकथामंजरी आदि की कथाएं पाठ्य सामग्री में सम्मिलित हों ताकि बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास हो सके ।

निम्नलिखित अनुशंसित विषयों को एकीकृत तरीके से पाठ्य सामग्री में समाहित किया जा सकता है :

शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया

बच्चों का अन्य भाषाओं की तुलना में संस्कृत भाषा से परिचय विलम्ब से प्रारम्भ होता है । बच्चों को अपने परिवेश में संस्कृत भाषा को सुनने व ग्रहण करने का अवसर बहुत कम उपलब्ध हो पाता है, इसलिए यह भाषा शुरुआती स्तर पर उन्हें कठिन प्रतीत होती है। इस भाषा की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सहज, सरल एवं रोचक बनाने की आवश्यकता है ताकि इसके प्रति बच्चों की अभिरुचि बढ़ सके। इस उद्देश्य को पूरा करने का उत्तरदायित्व शिक्षकों पर होता है । अतः उन्हें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को बहुआयामी बनाना होगा और उसे बच्चों के परिवेश से जोड़ना होगा ।

- बच्चों को स्वतंत्र अभिव्यक्ति के यथा-संभव अवसर उपलब्ध कराए जाए। मौखिक अभ्यास हेतु परस्पर संवाद, कथा-वाचन एवं श्रवण, चित्राधारित वर्णन, एकल श्लोकोच्चारण, अभिनय, भाषण, श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता, कव्वाली प्रतियोगिता आदि गतिविधियां प्रयोग में लाई जाए।
- पाठ्य सामग्री को बच्चों के परिवेश से जोड़ते हुए समझाया जाए ताकि बच्चे आसानी से समझ सकें ।
- बहुभाषावाद का प्रयोग शिक्षण-अधिगम के स्त्रोत के रूप में किया जाए ताकि बच्चों को विषय वस्तु को समझने में आसानी हो।
- ऑडियो, वीडियो (श्रव्य, दृश्य) माध्यमों का उचित प्रयोग किया जाए ।
- संस्कृत भाषा के व्यावहारिक प्रयोग हेतु परस्पर संवाद को प्रोत्साहन दिया जाए जिसमें शिक्षक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करें ।
- कक्षा में हर प्रकार की विभिन्नताओं के प्रति रचनात्मक, सकारात्मक एवं संवेदनशील परिवेश का निर्माण किया जाए ।
- बच्चों को सृजनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित किया जाए तथा उनके कार्यों को प्रोत्साहित किया जाए ।
- कक्षा में मनोरंजक गतिविधियां कराई जाए और अन्य विषयों के साथ इसे एकीकृत किया जाए तथा सभी बच्चों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जाए ।

थीम 1: श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन

भूमिका - आओ मिलकर संस्कृत सीखें - इसके अंतर्गत दैनिक प्रयोग में आने वाले हिन्दी शब्दों में अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) लगाकर संस्कृत से सामंजस्य करते हुए अभिरुचि उत्पन्न करना । यथा : पुस्तक - पुस्तकम् , सुप्रभात-सुप्रभातम् । छात्र-छात्रः , अध्यापक-अध्यापकः ।

छात्रों की कोमल बुद्धि तथा उनके स्तर के अनुसार अत्यन्त सरल भाषा का प्रयोग करना । विषयों को सरल एवं सुबोध ढ़ंग से छात्रों तक पहुँचाने का प्रयास करना । विषयों को मनोरंजक तथा अधिक ग्राह्य बनाने के लिए यथा अवसर आकर्षक चित्रों का समावेश करना ।

अधिगम उपलब्धियाँ (Learning outcomes):

- श्लोक वाचन के स्पष्ट उच्चारण एवं गायन द्वारा संस्कृत के प्रति अभिरुचि उत्पन्न कर सकेंगे ।
- दिनचर्या में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों द्वारा संस्कृत शब्द ज्ञान में वृद्धि के साथ साथ साधारण बोलचाल की भाषा में संस्कृत शब्दों का यथावसर प्रयोग करना भी सीखेंगे ।
- संस्कृत वर्णमाला का परिचय प्राप्त कर सकेंगे ।
- व्यावहारिक शब्दों के ज्ञान एवं वाक्यों को समझकर अनुक्रिया करेंगे ।
- संस्कृत में १ से २० तक संख्यावाची शब्दों से परिचित होंगे और बोलने में समर्थ होंगे ।
- संस्कृत के पुंल्लिंग शब्दों का ज्ञान प्राप्त करेंगे और उसमें एकवचन और बहुवचन का प्रयोग करना सीखेंगे ।
- स्त्रीलिंग शब्दों से अवगत होंगे और उसमें एकवचन और बहुवचन का प्रयोग करना सीखेंगे ।
- नपुंसकलिंग शब्दों से परिचित होंगे और उसमें एकवचन और बहुवचन का प्रयोग करना सीखेंगे ।
- लट् लकार (वर्तमान काल) के तीनों पुरुषों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- उत्तम पुरुष के प्रयोग द्वारा स्वयं संस्कृत भाषा में वार्तालाप कर सकेंगे । यथा - अहं गच्छामि । केवल एकवचन और बहुवचन का प्रयोग करना अभीष्ट है ।
- मध्यम पुरुष के प्रयोग द्वारा स्वयं संस्कृत भाषा में वार्तालाप कर सकेंगे । यथा - त्वम् गच्छसि । केवल एकवचन और बहुवचन का प्रयोग करना अभीष्ट है ।
- प्रथम पुरुष के प्रयोग द्वारा स्वयं संस्कृत भाषा में वार्तालाप कर सकेंगे । यथा - सः गच्छति । केवल एकवचन और बहुवचन का प्रयोग करना अभीष्ट है ।
- प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) , वह (एकवचन), वे (बहुवचन) का ज्ञान प्राप्त करेंगे एवं प्रयोग कर सकेंगे ।

नोटः 'द्विवचन' का प्रयोग अग्रिम कक्षा के लिए प्रस्तावित है ।

श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन

अनुशंसित विषय क्षेत्र	अनुशंसित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
▸ सरल श्लोक वाचन एवं गायन यथा-त्वमेव माता	▸ विभिन्न श्लोक सुनायें और उनके उच्चारण पर विशेष बल दें ।	▸ ऑडियो, वीडियो तथा चार्ट के माध्यम से ।

श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन

अनुशंसित विषय क्षेत्र	अनुशंसित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
च पिता त्वमेव इत्यादि । ▸ दैनिक प्रयोग में आने वाले शब्दों का प्रयोग जैसे फलों के नाम, शरीर के अंगों के नाम, पशुओं के नाम, पक्षियों के नाम, दिनों के नाम । ▸ सरल व्यावहारिक वाक्यों का प्रयोग जैसे - गच्छ, पठ, उपविश, आगच्छ, गच्छामि, शुभकामना सम्बन्धी, जन्मदिवस वाक्य आदि । ▸ संख्यावाची शब्दों का संस्कृत भाषा में ज्ञान (एक से दस तक) ▸ अकारान्त पुंल्लिंग एकवचन, बहुवचन शब्दों से अवगत कराना, यथा - रामः, छात्रः, बालकः । ▸ आकारान्त स्त्रीलिंग एकवचन, बहुवचन शब्दों से अवगत कराना, यथा - रमा, छात्रा, बालिका । ▸ नपुंसकलिंग एकवचन, बहुवचन शब्दों द्वारा छात्रों का ज्ञानवर्धन, यथा - फलम्, पुस्तकम् इत्यादि । ▸ लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन, बहुवचन का प्रयोग, यथा - त्वम् गच्छसि । ▸ लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन, बहुवचन का प्रयोग, यथा - सः/सा	▸ ऑडियो सुनायें, श्लोक आदि से संबंधित प्रतियोगितायें करायें । ▸ दिनचर्या में प्रयुक्त होने वाले साधारण बोलचाल के संस्कृत शब्दों का प्रयोग कक्षा में अधिकाधिक करें । ▸ बच्चों में परस्पर प्रतियोगिता भावना द्वारा शिक्षण अभ्यास कराया जाये । ▸ स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किऐ जायें । ▸ सरल व्यावहारिक वाक्यों का प्रयोग जैसे - गच्छ, पठ, उपविश, आगच्छ, गच्छामि, शुभकामना सम्बन्धी, जन्मदिवस वाक्य आदि । ▸ पाठ्य-सामग्री को बच्चों की रुचि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया जाये । विषय-वस्तु को रोचक बनाया जाये (जैसे- पक्षियों के नाम बताते समय उनकी बोली का प्रयोग, फलों के नाम बताते समय फलों मे पाये जाने वाले पौष्टिक तत्वों को बताया जा सकता है ।) ▸ कक्षा के अन्तर्गत पाठ्य-सामग्री का प्रयोग करते समय बच्चों की रुचि का ध्यान रखा जाये । ▸ दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग । ▸ वाक् प्रस्तुति करवाने का अवसर प्रदान करें तथा समूह वार्तालाप पर बल दें । ▸ सरल व्यावहारिक वाक्यों का प्रयोग जैसे - गच्छ, पठ, उपविश, आगच्छ, गच्छामि, आदि । ▸ परस्पर संवाद के माध्यम से शिक्षण-अधिगम को बेहतर बनाया जाये । ▸ जन्मदिन/महापुरुष जयन्ती/वर्षगांठ अन्य उत्सव सम्बन्धी वाक्यों का ज्ञान करायें । ▸ विभिन्न चित्रों के माध्यम से और कक्षा में उपस्थित बालक/बालिकाओं द्वारा पुंल्लिंग/स्त्रीलिंग/ नपुंसकलिंग एवं संख्यावाची शब्दों का ज्ञान कराएं । ▸ कक्षा में कुछ छात्रों के माध्यम से एवं संवाद द्वारा	▸ शब्दार्थ बतायें । ▸ चित्र पर आधरित वाक्यों के माध्यम से । ▸ वार्तालाप के माध्यम से । ▸ आकर्षक चित्रों के माध्यम से । ▸ चार्ट - पेपर, कार्य पुस्तिका में चित्र-पहचान, रिक्त स्थान पूर्ति प्रयोग करके ध्वनि एवं अभिनय के माध्यम से, चित्र पर आधारित वाक्यों के माध्यम से । ▸ कार्य पुस्तिका के चित्रों द्वारा अभ्यास । ▸ कक्षा में कहानी/समाचार आदि का वाचन । ▸ रोचक तथा शिक्षाप्रद कहानी । ▸ छात्र एवं अध्यापक द्वारा अभिनय एवं संवाद माध्यम से । ▸ वार्तालाप माध्यम से ।

श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन		
अनुशंसित विषय क्षेत्र	**अनुशंसित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया**	**अनुशंसित अधिगम स्त्रोत**
गच्छति, बालकः / बालिका गच्छति ।	उत्तम, मध्यम तथा प्रथम पुरुष का ज्ञान करायें ।	

थीम 1: श्रवण, भाषण एवं पठन

संस्कृत भाषा के मौखिक रूप को सुनकर समझने में सक्षम होना । विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत भाषा में अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करना । संस्कृत भाषा के सामान्य वाक्यों को पढ़ने में समर्थ होना ।

अधिगम उपलब्धियाँ (Learning outcomes):

- संस्कृत श्लोकों / गीतों के शुद्ध लयात्मक गायन के प्रति प्रेरित होंगे, जिससे उनकी संस्कृत विषय में अभिरुचि बढ़ेगी ।
- संस्कृत वर्णमाला का परिचय प्राप्त कर सकेंगे ।
- संस्कृत शब्दों के शुद्ध उच्चारण और पठन में समर्थ होंगे ।
- पूर्व परिचित शब्दों के द्विवचन रूप का परिचय, अभ्यास एवं प्रयोग कर सकेंगे ।
- दैनिक व्यवहार में आने वाली वस्तुओं एवं व्यक्तियों के संस्कृत नाम तथा उनके प्रयोग से परिचित हो सकेंगे ।
- १ से ३० तक संस्कृत के संख्यावाची शब्दों से परिचित होकर उनका प्रयोग कर सकेंगे ।
- पाठ्य - सामग्री को पढ़कर समझ सकेंगे ।

श्रवण, भाषण एवं पठन

अनुशंसित विषय/क्षेत्र	अनुशंसित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
वन्दना - कोई भी बोधगम्य साधारण श्लोक यथा-सरस्वती वंदना (या कुन्देन्दुतुषारहारधवला)	संस्कृत कक्षा की शुरुआत शुद्धोच्चारण पर बल देते हुए लयात्मक रुप से श्लोकों के गायन से की जाए ।	शिक्षक द्वारा गायन, ऑडियो-वीडियो के माध्यम से
संस्कृत वर्णमाला का परिचय (वर्ण, स्वर, व्यञ्जन आदि) पदों का संयोजन एवं वियोजन	शिक्षक के द्वारा विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों के माध्यम से छात्र स्वयं के नाम, मित्रों एवं परिवार के सदस्यों के नामों का संयोजन एवं वियोजन करेंगे। सर्वप्रथम अध्यापक द्वारा अपने नाम का संयोजन एवं वियोजन करना ।	फ्लैश कार्ड्स, चार्ट्स, ऑडियो-वीडियो के माध्यम से, पी.पी.टी के प्रयोग द्वारा।

श्रवण, भाषण एवं पठन

अनुशंसित विषय/क्षेत्र	अनुशंसित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
▸ पूर्वपरिचित शब्दों के द्विवचन का परिचय और तीनों वचनों में अभ्यास ।	▸ अध्यापक द्वारा द्विवचन के उदाहरणों पर आधारित चार्ट, फ्लैश कार्ड से छात्रों को द्विवचन के बारे में समझाया जाएगा और वाक्यों में प्रयोग करना सिखाया जाएगा । ▸ कक्षा में उपलब्ध वस्तुओं के नाम का तीनों वचनों में अभ्यास यथा - पुस्तकम्, पुस्तके, पुस्तकानि	▸ फ्लैश कार्ड्स, चार्ट्स, ऑडियो-वीडियो के माध्यम से पी.पी.टी के प्रयोग द्वारा।
▸ दैनिक व्यवहार में आने वाली वस्तुओं एवं व्यक्तियों के संस्कृत नाम से परिचित कराना एवं मौखिक अभ्यास ।	▸ कक्षा में उपलब्ध वस्तुओं के संस्कृत नाम से अवगत कराना । विभिन्न प्रकार के चार्ट (फल, सब्जी, शरीर के अंग, स्वास्थ्य संबंधी, हमारे मददगार यथा - (सौचिकः, मालाकारः आदि) फूलों, रंगों, रसोई से संबंधित चार्ट । ▸ फ्लैश कार्ड्स पर विभिन्न वस्तुओं एवं व्यक्तियों के चित्र बनाकर अभ्यास । ▸ पी.पी.टी के माध्यम से प्रश्न पूछेंगें ।	▸ अपने परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं एवं व्यक्तियों के नाम कार्ड दिखाकर प्रस्तुत करना ।
▸ संख्यावाची संस्कृत शब्दों (१-३०) का परिचय एवं मौखिक अभ्यास ।	▸ अपने आस-पास उपलब्ध वस्तुओं की संख्या को संस्कृत में पूछना । ▸ कक्षा में एक स्थान पर विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्री यथा - छोटी-छोटी गेंद, रंगीन चॉक, विभिन्न प्रकार के रंगीन फ्लैश कार्ड्स पर संख्यायें लिखकर । ▸ विद्यार्थी के बैग में उपलब्ध सामाग्री (पुस्तक, अभ्यास पुस्तिका, पेंसिल आदि) गिनवायें । ▸ बालक-बालिकाओं को अलग-अलग गिनवाकर, संस्कृत संख्याओं को बोला जाए ।	▸ शब्द-सीढी, वर्ग-पहेली आदि, बनाकर संस्कृत में संख्याओं को लिखना ।

थीम 2 : भाषा – लेखन

विद्यार्थियों द्वारा अपने स्तर अनुकूल पाठ्य सामग्री को समझकर पढ़ने में समर्थ होना । संज्ञा शब्दों के साथ-साथ क्रिया शब्दों के प्रयोग द्वारा लघु वाक्य-रचना में कुशल होना । संस्कृत भाषा में चित्र पर आधारित लघु वाक्यों के लेखन में सक्षम होना ।

अधिगम उपलब्धियाँ (Learning outcomes):

- सर्वनाम पदों का परिचय प्राप्त करेंगे । यथा – तत्, एतत्, किम्, अस्मद्, और युष्मद् (केवल प्रथमा विभक्ति में)।
- कारक एवं विभक्तियों का सामान्य प्रयोग सीख सकेंगे ।
- लट् लकार में विभिन्न क्रियाओं (यथा पठ्, लिख्, हस् , चल्, चर्, वद्, कथ्) आदि की सहायता से वाक्य रचना कर सकेंगे ।
- अकारान्त पुल्लिंग (यथा – बालकः, रामः) आदि शब्दों का प्रयोग करना सीखेंगे ।
- आकारान्त स्त्रीलिंग (यथा – बालिका , लता) आदि शब्दों का प्रयोग करना सीखेंगे ।
- अकारान्त नपुंसकलिंग (यथा – पुस्तकम् , फलम्) आदि शब्दों का प्रयोग करना सीखेंगे ।
- १ से ३० तक संस्कृत संख्यावाची शब्दों से परिचित होकर उनका प्रयोग कर सकेंगे ।
- संस्कृत में चित्र पर आधारित लघु वाक्य रचना करने में समर्थ होंगे ।
- पाठ्य-सामग्री से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखने में समर्थ होंगे ।

भाषा – लेखन

अनुशंसित विषय/क्षेत्र	अनुशंसित-शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
सर्वनाम परिचय यथा – तत्, किम्, एतत्, अस्मद्, युस्मद् (केवल प्रथमा विभक्ति)	छात्र परस्पर सर्वनाम पदों का प्रयोग करके प्रश्न पूछें । यथा – त्वम् किम् करोसि ? अहम् पुस्तकम् पठामि । छात्र सर्वनाम पदों का प्रयोग करते हुए वार्तालाप करें । कक्षा में उपलब्ध दूर एवं पास की वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए सर्वनाम पदों का वाक्य में प्रयोग । यथा – सः पठति । एषः लिखति ।	फ्लैश कार्ड्स, चार्ट्स, एवं पी.पी.टी, श्यामपट्ट अभ्यास ।
लट् लकार में विभिन्न क्रियाओं यथा- पठ्, लिख्, चर्, वद्, कथ्, आदि की	कक्षा में चित्र द्वारा विभिन्न क्रियाओं का बोध कराना ।	फ्लैश कार्डस, चार्ट्स, एवं पी.पी.टी, श्यामपट्ट अभ्यास।

भाषा - लेखन

अनुशंसित विषय/क्षेत्र	अनुशंसित-शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
सहायता से वाक्य रचना । यथा - सः पठति । त्वम् पठसि । अहम् पठामि ।	एक छात्र द्वारा क्रिया का अभिनय तथा दूसरे छात्र द्वारा अभिनीत क्रिया को संस्कृत में बताना । अभिनीत क्रिया का नाम कार्य पुस्तिका में लिखना ।	
लिंग एवं वचन परिचय	कक्षा में उपलब्ध स्रोतों द्वारा तीनों लिंगों एवं वचनों का अभ्यास ।	फ्लैश कार्डस, चार्ट्स, एवं पी.पी.टी, श्यामपट्ट अभ्यास ।
अकारान्त पुंल्लिंग शब्दों का तीनों वचनों में प्रयोग । यथा - बालकः, बालकौ, बालकाः	चित्रों के माध्यम से पुंल्लिंग शब्दों का बोध। अपनी पुस्तिका में चित्रों की सहायता से पुल्लिंग शब्दों का लिखित अभ्यास । दैनिक प्रयोग में आने वाले पुंल्लिंग शब्दों का संस्कृत भाषा में अभ्यास ।	फ्लैश कार्डस, चार्ट्स, एवं पी.पी.टी, श्यामपट्ट अभ्यास ।
आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों का तीनों वचनों में प्रयोग । यथा - बाला, बाले, बालाः	चित्रों के माध्यम से स्त्रीलिंग शब्दों का बोध । अपनी पुस्तिका में चित्रों की सहायता से स्त्रीलिंग शब्दों का लिखित अभ्यास । दैनिक प्रयोग में आने वाले स्त्रीलिंग शब्दों का संस्कृत भाषा में अभ्यास ।	फ्लैश कार्ड्स, चार्ट्स, एवं पी.पी.टी, श्यामपट्ट अभ्यास ।
अकारान्त नपुंसक लिंग शब्दों का तीनों वचनों में प्रयोग । यथा - फलम्, फले, फलानि।	चित्रों के माध्यम से नपुंसक लिंग शब्दों का बोध । अपनी पुस्तिका में चित्रों की सहायता से नपुंसकलिंग शब्दों का लिखित अभ्यास । दैनिक प्रयोग में आने वाले नपुंसकलिंग शब्दों का संस्कृत भाषा में अभ्यास ।	फ्लैश कार्ड्स, चार्ट्स, एवं पी.पी.टी, श्यामपट्ट अभ्यास ।
संख्यावाची शब्दों (१-३०) को संस्कृत में लिखना	कक्षा में संस्कृत माध्यम से छात्रों की गिनती कराना । हाथ की अंगुलियों के माध्यम से गणना करना । तत्पश्चात् संख्याओं को संस्कृत में लिखना ।	फ्लैश कार्ड्स, चार्ट्स, एवं पी.पी.टी श्यामपट्ट अभ्यास।
चित्र पर आधारित वाक्य-रचना	विभिन्न प्रकार के चित्रों को दिखाकर यथा - उद्यान, मेला, कक्षा आदि पर छोटे-छोटे वाक्य लिखवाना ।	फ्लैश कार्ड्स, चार्ट्स, एवं पी.पी.टी, श्यामपट्ट अभ्यास।

भाषा – लेखन		
अनुशंसित विषय/क्षेत्र	अनुशंसित–शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
	➢ सृजनशीलता के विकास हेतु अपने परिवेश और समाज से जुड़े विषयों पर लेखन के लिए प्रेरित करना ।	

थीम 1 : श्रवण, भाषण एवं पठन

श्लोकों का सम्यक् रूप से गायन करना । गायन द्वारा रुचि उत्पन्न होना, उसमें निहित भावों को समझना। संस्कृत शब्दों एवं वाक्यों का शुद्ध उच्चारण करना, दूरदर्शन पर प्रसारित समाचारों को भलीभांति सुनकर समझना । संस्कृत भाषा में आत्मविश्वास के साथ लघु वाक्यों में वार्तालाप करने में सक्षम होना ।

अधिगम उपलब्धियाँ (Learning outcomes):

- श्लोकों के सहजभाव को समझकर उनमें निहित मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात् कर सकेंगे ।
- संस्कृत भाषा में सामान्य वार्तालाप करने में समर्थ होंगे ।
- दूरदर्शन एवं रेडियो पर संस्कृत समाचारों के श्रवण तथा संस्कृत पत्रिकाओं के पठन के माध्यम से संस्कृत पढ़ने में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे ।
- शब्दकोश में हुई वृद्धि के द्वारा नवीन वाक्य संरचना करने में सक्षम होंगे ।
- प्रश्नों के उत्तर सरल संस्कृत भाषा में मौखिक रूप से व्यक्त करने में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे ।
- सरल संस्कृत पाठों को पढ़कर उनके सार को ग्रहण कर सकेंगे तथा उनपर आधारित अभ्यास को समझ सकेंगे ।
- संस्कृत संख्यावाची शब्दों (१ - ५०) को समझकर व्यावहारिक जीवन में उनका प्रयोग कर सकेंगे ।
- अपने विचारों को आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकेंगे ।

श्रवण, भाषण एवं पठन

अनुशंसित विषय / क्षेत्र	अनुशंसित शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
सुभाषितानि - नैतिक मूल्यों पर आधारित सरल श्लोक ।	श्लोकों का पठन-पाठन एवं गायन । श्लोकों के कठिन शब्दों के अर्थ समझाना। श्लोकों में निहित मूल्यों को समझाना । बच्चे श्लोकों का अर्थ समझकर उसके मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएंगे ।	विभिन्न श्लोकों का कंठस्थीकरण करके कक्षा में प्रस्तुत करना । ऑडियो-वीडियो के माध्यम से श्लोकों का प्रस्तुतीकरण ।
सरल संस्कृत भाषा में सामान्य वार्तालाप (संवाद पर आधारित पाठ) ।	कक्षा में सरल संस्कृत वाक्यों का प्रयोग । प्रश्नोत्तर माध्यम से वार्तालाप करना । यथा - किम् सर्वे छात्राः उपस्थिताः ? न, विकासः अनुपस्थितः अस्ति । आदि ।	प्रश्नोत्तर माध्यम । चित्र के माध्यम से ।
दूरदर्शन पर प्रसारित समाचारों का श्रवण कराने की व्यवस्था ।	रेडियो , ऑडियो-वीडियो, दूरदर्शन अन्य समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं का प्रयोग ।	रेडियो , ऑडियो-वीडियो, संस्कृत समाचार पत्र एवं पत्रिकायें ।

श्रवण, भाषण एवं पठन

अनुशंसित विषय / क्षेत्र	अनुशंसित शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
▸ दैनिक व्यवहार की समस्त गतिविधियों (कक्षा, परिवार, पुस्तकालय, मेला, जन्मदिन, सभा, क्रीड़ाक्षेत्र, उद्यान, प्राकृतिक दृश्य, यात्रायें आदि) पर आधारित वाक्य संरचना ।	▸ विभिन्न गतिविधियों से संबंधित वाक्य रचना को समझाना-शिक्षक द्वारा चित्र प्रस्तुत करना तथा वाक्य बनाकर समझाना । ▸ छात्रों द्वारा स्वतः वाक्य संरचना का अभ्यास करना । कुछ नवीन अपरिचित संस्कृत शब्दों को समझाते हुए उनका प्रयोग समझाना ।	▸ वार्तालाप ▸ चित्र ▸ शब्द तालिका ।
▸ विभिन्न पर्व (राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं सामाजिक), ऋतुयें, शिक्षक, परिवेश, विवाह, जन्मदिवस, मनोरंजन, घर, परिवार, मित्र, विद्यालय, स्वास्थ्य, प्रकृति, खेल, मानवीय मूल्य तथा समावेशन ***(Inclusiveness)*** आदि ।	▸ इन समस्त विषयों पर परिचर्चा, पठन-पाठन, समझना-समझाना तथा आत्मसात् करना । ▸ इन विषयों से संबंधित अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना ।	▸ वार्तालाप में छोटे-छोटे वाक्यों के प्रयोग द्वारा ।
▸ संख्यावाची शब्दों का ज्ञान *(१ से ५०)* ।	▸ शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर संख्यावाची शब्दों का प्रस्तुतीकरण । ▸ संख्यावाची शब्दों का चार्ट-प्रस्तुतीकरण । ▸ आदेश - निर्देश के छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा क्रिया कराना । यथा - पञ्च छात्राः अत्र आगच्छन्तु । अत्र कति पुस्तकानि सन्ति आदि ।	▸ चार्ट ▸ फ्लैश कार्ड ▸ प्रश्नोत्तर द्वारा ।

थीम 2 : भाषा – लेखन

रुचिकर कथाओं को पढ़कर घटनाक्रम का संयोजन करने में सक्षम होना । संस्कृत की वर्तनी का सही ज्ञान और लिखने की सामर्थ्य विकसित करना । चित्र पर आधारित वाक्य रचना में समर्थ होना । रचनात्मक कौशल का विकास करना ।

अधिगम उपलब्धियाँ (Learning outcomes):

- कारकों के अभ्यास द्वारा संस्कृत भाषा में कारकों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- धातुरूपों के अभ्यास द्वारा संस्कृत भाषा में क्रियाओं का प्रयोग करना सीख सकेंगे ।
- लट् लकार (वर्तमानकाल) का ज्ञान एवं प्रयोग सीख सकेंगे ।
- लृट् लकार (भविष्यकाल) का ज्ञान एवं प्रयोग सीखेंगे ।
- संज्ञा शब्द रूप – अकारान्त (पुंल्लिंग- मुनि, कपि, हरि), ईकारान्त (स्त्रीलिंग- नदी) तथा इकारान्त (नपुंसक लिंग – दधि) का ज्ञान एवं प्रयोग सीखेंगे ।
- अव्यय – शब्दों का (यथा – च, कुत्र, अत्र, तत्र, इह, इतः, ततः, अपि इत्यादि) प्रयोग करना सीख सकेंगे ।
- स्वर सन्धि – (दीर्घ और गुण सन्धि) का ज्ञान एवं प्रयोग सीखेंगे ।
- मूल्यपरक चित्रों पर आधारित वाक्य संरचना कर सकेंगे ।
- पाठ्य-सामग्री से संबंधित प्रश्नों को समझकर उनके उत्तर लिखने में सक्षम हो सकेंगे ।

भाषा – लेखन

अनुशंसित विषय / क्षेत्र	अनुशंसित शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
▸ कारक परिचय – विभक्ति चिह्न एवं प्रयोग	▸ कहानी, अनुच्छेद, संवाद एवं लघु-कथाओं आदि के द्वारा कारक चिह्नों से परिचित कराना । ▸ मूल शब्द में विभक्ति लगाकर कारकों का प्रयोग समझाना । यथा – नदी, नद्यौ, नद्यः । ▸ विभक्तियों पर आधारित चित्र दिखाकर वाक्य रचना । यथा – तृतीया विभक्ति पर आधारित चित्र – सः नेत्राभ्याम् पश्यति । सः कलमेन लिखति ।	▸ पी.पी.टी के माध्यम से । ▸ चार्ट-प्रस्तुतीकरण ।
▸ धातु – परिचय लकार परिचय : – लट् लकार	▸ विभिन्न धातुओं से सामान्य परिचय कराना। यथा – पठ् , गम् , चल् , वद् , हस् , नम्, खाद् आदि ।	▸ चार्ट के माध्यम से । ▸ वाक्य-प्रयोग द्वारा ।

भाषा - लेखन

अनुशंसित विषय / क्षेत्र	अनुशंसित शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
- लृट् लकार	▸ किसी भी अनुच्छेद तथा अन्य विधाओं द्वारा लट् लकार एवं लृट् लकार का ज्ञान । ▸ लट् एवं लृट् लकार का प्रयोग करते हुए प्रश्नोत्तर करना । ▸ लट् लकार के वाक्यों को लृट् लकार में परिवर्तित करना । यथा - लट् लकार- सः पुस्तकं पठति । लृट् लकार- सः पुस्तकं पठिष्यति । लट् लकार- अहं सत्यम् वदामि । लृट् लकार- अहं सत्यम् वदिष्यामि ।	
▸ संज्ञा शब्द रूप : पूर्वपठित शब्द रूपों के साथ - साथ इकारान्त पुंल्लिंग (मुनि, कपि, हरि) ईकारान्त स्त्रीलिंग (नदी) इकारान्त नपुंसकलिंग (दधि)	▸ शिक्षक द्वारा छात्रों के समक्ष शब्दरूपों का शुद्ध उच्चारण करना और क्रमशः छात्रों से कराना । ▸ शब्द रूप स्मरण प्रक्रिया । ▸ रूपों का लयबद्ध उच्चारण (शिक्षक द्वारा कोई भी लय बनाई जा सकती है ।) ▸ रूपों का छोटा समूह बनाकर । यथा - एक जैसे शब्द रूपों का एक समूह बना देना । ▸ अभ्यास (पुनः-पुनः) द्वारा ।	▸ पी.पी.टी. । ▸ श्रव्य माध्यम से । ▸ शब्द रूपों की तालिका द्वारा ।
▸ अव्यय शब्दों का परिचय एवं प्रयोग	▸ अव्यय शब्दों का अर्थ समझाना । ▸ अव्यय शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना ।	▸ चार्ट के माध्यम से ।
▸ स्वर सन्धि	▸ दीर्घ सन्धि का प्रयोग सिखाना । यथा - विद्या + आलयः = विद्यालयः कपि + ईशः = कपीशः वधू + उत्सव = वधूत्सवः गुण सन्धि का प्रयोग सिखना । यथा - सुर + ईशः = सुरेशः विवाह + उत्सवः = विवाहोत्सवः महा + ईशः = महेशः	▸ चार्ट के माध्यम से ।

भाषा - लेखन		
अनुशंसित विषय / क्षेत्र	**अनुशंसित शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया**	**अनुशंसित अधिगम स्त्रोत**
▸ मूल्यपरक चित्रों पर आधारित वाक्य-रचना	▸ उद्यान, पुस्तकालय, विद्यालय, भोजनालय आदि विभिन्न शीर्षकों से संबन्धित चित्र प्रस्तुत करना तथा शीर्षकों से संबंधित वाक्य बनाना । ▸ छात्रों को चित्र संबंधी शब्द मंजूषा के द्वारा वाक्य बनाने का अभ्यास करवाना । ▸ विषयों से संबंधित अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना ।	▸ पी.पी.टी द्वारा चित्र दिखाकर ।

थीम 1 : श्रवण, भाषण एवं पठन

श्लोकों का सस्वर गायन करना । संस्कृत भाषा के शब्दों तथा वाक्यों के शुद्ध एवं सम्यक् उच्चारण में कुशलता प्राप्त करना । सृजनात्मक कौशलों को विकसित करना । संस्कृत भाषा में पूर्ण विश्वास के साथ परस्पर संवाद करने में सक्षम होना । संस्कृत भाषा को सुनकर व समझकर प्रतिक्रिया कर पाने में समर्थ होना ।

अधिगम उपलब्धियाँ (Learning outcomes):

- श्लोकों के मूलभाव को समझकर उनमें अंतर्निहित मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएंगे ।
- संस्कृत भाषा में वार्तालाप करने में समर्थ होंगे ।
- दूरदर्शन एवं रेडियो पर संस्कृत समाचारों को सुनकर एवं देखकर भाषा को आत्मसात् कर सकेंगे ।
- श्लोकों एवं सूक्तियों के माध्यम से छात्र अपनी संस्कृति से जुड़कर उनके माध्यम से अपने जीवन तथा व्यवहार को और उपयोगी बना सकेंगे ।
- छात्र सरल कथा वाचन सहजता से कर सकेंगे ।
- छात्र कथाओं का मनन एवं पठन-पाठन कर सकेंगे और पाठ के अभिनय द्वारा नाट्य प्रस्तुति करने की क्षमता विकसित कर सकेंगे ।
- लिंग-वचन-क्रिया का सही प्रयोग करते हुए अपनी बात कहने में सक्षम हो सकेंगे ।

श्रवण, भाषण एवं पठन

अनुशंसित विषय / क्षेत्र	अनुशंसित शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया	अनुशंसित अधिगम स्त्रोत
सुभाषितानि - नैतिक मूल्यों पर आधारित सरल श्लोक ।	श्लोकों का शुद्धोच्चारण एवं गायन । श्लोकों को सरल भाषा में समझाना । श्लोकों में निहित मानवीय मूल्यों को समझाना तथा अपने जीवन में अपनाने के लिए बच्चों को प्रेरित करना ।	ऑडियो-वीडियो के माध्यम से ।
संस्कृत भाषा में वार्तालाप	कक्षा में संस्कृत वाक्यों का प्रयोग । प्रश्नोत्तर के माध्यम से वार्तालाप । छात्रों को संस्कृत में वार्तालाप करने के लिए प्रोत्साहित करना ।	परस्पर छात्रों में वार्तालाप ।
दूरदर्शन पर प्रसारित समाचारों श्रवण कराने की व्यवस्था ।	रेडियों, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिकाओं एवं ऑडियो-वीडियो साधनों का प्रयोग । बच्चों को आशुभाषण के अवसर प्रदान करना ।	रेडियो , ऑडियो-वीडियो, संस्कृत समाचार पत्र एवं पत्रिकायें ।

श्रवण, भाषण एवं पठन		
अनुशंसित विषय / क्षेत्र	**अनुशंसित शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया**	**अनुशंसित अधिगम स्त्रोत**
▸ सूक्तियाँ	▸ सूक्तियों का भाव समझाना उसमें निहित आदर्श को समझाना तथा उनका अनुपालन करने के लिए छात्रों को प्रेरित करना । ▸ छोटी कहानी के माध्यम से सूक्ति के सारगर्भित भाव को सरल तरीके से ग्राह्य बनाना ।	▸ सूक्तियों को कार्ड् पर लिखकर छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करना ।
▸ कथा - वाचन	▸ संस्कृत में रोचक कथाओं को सुनाकर छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करना । ▸ कथाओं का चार्ट उपलब्ध कराना । ▸ कथा-वाचन के लिए प्रेरित करना । कथा का नाट्य प्रस्तुत करना ।	▸ चार्ट ▸ ऑडियो-वीडियो ▸ अभिनय

थीम 2 : भाषा - लेखन

रोचक कहानियों एवं नाटकों को पढ़कर घटनाक्रम का संयोजन करना । संस्कृत भाषा में शुद्ध एवं अर्थपूर्ण वाक्य रचना की सामर्थ्य विकसित करना । चित्र पर आधारित अनुच्छेद लेखन में समर्थ होना । सृजनात्मक कौशल का विकास करना ।

अधिगम उपलब्धियाँ (Learning outcomes):

- कारक (विभक्तियों) को ठीक प्रकार से समझने में सक्षम हो सकेंगे ।
- धातुरूपों के अभ्यास द्वारा संस्कृत भाषा में क्रियाओं का प्रयोग करना सीख सकेंगे ।
- लङ् लकार (भूतकाल) का ज्ञान एवं प्रयोग सीख सकेंगे ।
- लोट् लकार (आज्ञार्थक) का ज्ञान एवं प्रयोग सीखेंगे ।
- विधिलिंग लकार (इच्छार्थक) का ज्ञान एवं प्रयोग करना सीखेंगे ।
- संज्ञा शब्द रूप - उकारान्त, हलन्त और अकारान्त शब्दों का परिचय एवं प्रयोग कर सकेंगे ।
- सर्वनाम शब्द - (तत् , एतत् , किम् , अस्मद् और युष्मद्) इन शब्दों का परिचय एवं प्रयोग कर सकेंगे ।
- प्रत्यय - क्त्वा, ल्यप् और तुमुन् शब्दों का ज्ञान एवं प्रयोग सीखेंगे ।
- अव्यय - (तर्हि, यदा, तदा, किमर्थं, कथं आदि) शब्दों का परिचय एवं प्रयोग करना सीखेंगे ।
- सन्धि - (वृद्धि और यण्) का ज्ञान एवं प्रयोग सीखेंगे ।
- संख्या - संस्कृत संख्यावाची शब्दों (१-१००) को समझकर व्यावहारिक जीवन में उनका प्रयोग कर सकेंगे ।
- घटिका - घड़ी देखकर समय जान सकेंगे और संस्कृत में बता सकेंगे । यथा - १०:१५ सपाद्दशवादनम् , १०:३० सार्धदशवादनम् ।
- विभिन्न शब्दों को संदर्भो के अनुसार समझकर अपने लेखन में उनका प्रयोग करने में सक्षम हो सकेंगे ।

पूर्व पठित लकारों (लट् एवं लृट्) का अभ्यास :

भाषा - लेखन		
अनुशंसित विषय / क्षेत्र	**अनुशंसित शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया**	**अनुशंसित अधिगम स्त्रोत**
➢ कारक (विभक्तियाँ) पुनरावृत्ति ➢ लङ्लकार (भूतकाल) का परिचय । ➢ लोट् लकार (आज्ञार्थक) का परिचय । ➢ विधिलिंग लकार (इच्छार्थक का परिचय) । ➢ सर्वनाम (तत् , एतत् , किम् , अस्मद् , युष्मद्) । ➢ सूक्तियाँ । ➢ सुभाषित ।	➢ पाठ के माध्यम से सभी विभक्तियों का सरल वाक्यों मे प्रयोग कराना । ➢ शिक्षाप्रद पाठ के माध्यम से छात्रों को लङ्लकार (भूतकाल) से अवगत कराना । प्रश्नोत्तर विधि से वाक्य निर्माण सिखाना । ➢ शिक्षक कक्षा में आज्ञार्थक शब्दों के माध्यम से लोट् लकार एवं विधिलिंग से अवगत कराना । ➢ यथा - आगच्छतु । ➢ चित्रों के माध्यम से सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करना सिखाना। ➢ प्रचलित सूक्तियों का सस्वर अभ्यास करवाना तथा भावार्थ समझाना । ➢ नीतिपरक श्लोकों के माध्यम से सस्वर पठन, वाचन और अभ्यास करवाना ।	➢ कारक चिह्नों से संबंधित चार्ट का प्रयोग । ➢ अभ्यास पुस्तिका के माध्यम से । ➢ चित्रों के माध्यम से चार्ट प्रदर्शन करके ।
➢ एकांकी, नाटक, संवाद पर आधारित विषय ।	➢ शिक्षक द्वारा एकांकी या नाटक का अभिनय करवाते हुए पाठों का सम्पूर्ण ज्ञान प्रदान कराना ।	➢ कक्षा में दो अथवा दो से अधिक छात्रों के मध्य अभिनय तथा संवाद अभ्यास।
➢ संज्ञा शब्द रूप (पुनरावृत्ति-पूर्व पाठ्यक्रम) ।	➢ किसी कथा के आधार पर इन शब्द रूपों का प्रयोग सिखाना ।	➢ चार्ट के माध्यम से प्रयोग सिखाना ।
➢ पूर्व पठित धातु पठ्, गम्, खेल्, वद्, व अन्य धातु लभ्, सेव् आदि । ➢ इकारान्त, उकारान्त एवं सर्वनाम शब्द रूप यथा- तत् (वह) एतत् (यह) अस्मद् (मैं, हम), युष्मद् (तुम), किम् (क्या) ➢ धातु रूप (पुनरावृत्ति), लट् एवं	➢ शिक्षक द्वारा छात्रों के समक्ष धातु रूपों का शुद्ध आदर्श वाचन करना तथा अनुकरण वाचन द्वारा धातु रूपों का स्मरण कराना । ➢ अध्यापक द्वारा संस्कृत में एक से सौ तक संख्यावाची शब्दों का ज्ञान कराना तथा साधारण बोल चाल की भाषा में प्रयोग कराना । ➢ प्रत्यय शब्दों के माध्यम से नवीन शब्दों का निर्माण सिखाना, यथा - पठ् + क्त्वा (प्रत्यय) = पठित्वा ।	➢ परियोजना द्वारा लकारों का अभ्यास । ➢ अभ्यास पुस्तिका द्वारा । ➢ चार्ट पेपर द्वारा प्रत्ययों का अभ्यास । ➢ चित्रों तथा चार्ट के माध्यम से अभ्यास । ➢ चित्र तथा चार्ट के माध्यम से अभ्यास कराना । ➢ सरल कहानियों एवं गद्यांशों

भाषा - लेखन		
अनुशंसित विषय / क्षेत्र	**अनुशंसित शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया**	**अनुशंसित अधिगम स्त्रोत**
लृट्लकार, तथा लङ्लकार (भूतकाल) एवं लोट्लकार (आज्ञार्थक) का परिचय । संख्यावाची शब्द १-१०० । प्रत्यय । अव्यय । सन्धि (वृद्धि, यण) का अभ्यास घटिका । चित्र लेखन । सरल अनुच्छेद लेखन ।	अव्यय (अत्र, तत्र, तदा, यदा, कदापि, किमर्थम्, तर्हि, ह्यः, श्वः, अद्य, अधुना, सम्प्रति, अपितु आदि । शब्दों का प्रयोग प्रश्नोत्तर विधि से सिखाना । चित्र आधारित चार्ट द्वारा वाक्य-निर्माण करके अव्यय शब्दों का प्रयोग सिखाना । सन्धि का चार्ट प्रस्तुत करके सन्धि शब्दों का प्रयोग समझाना । घड़ी का चित्र प्रदर्शित करके समय देखना सिखाना । विभिन्न चित्रों को दिखाकर अनुच्छेद - लेखन का अभ्यास कराना । विभिन्न विषयों पर शब्द-मंजूषा देकर लघु कथाओं से संबंधित अनुच्छेद-लेखन का अभ्यास कराना । अनुच्छेद लेखन से संबंधित परियोजना कार्य देना । बच्चों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना ।	के माध्यम से अभ्यास । कुछ सरल विषयों के माध्यम से लेखन अभ्यास ।